शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन : एक अध्ययन

राजश्री सिकरवार (शोधार्थी)
हिन्दी साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज का विस्तृत जीवन प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है। हिन्दी के अनेकानेक उपन्यास एक अमृत कुंभ की भांतिहैं, जो पाठकों को सुमधुरता एवं रुचिपूर्ण स्वाध्याय का सुख देते हैं। उपन्यास लेखकों की दृष्टि केवल एक विषय पर न होकर सम्पूर्ण समाज, देश, राजनीति, धर्म एवं आर्थिक सभी पर बनी रही है। इसी तरह ग्रामीण यथार्थ को भी आधार बनाकरउपन्यास लेखन का कार्य प्रारंभ किया। जिन लेखकों ने गाँव की जिंदगी को समीप से देखा, उसे ही आधार बनाकर उपन्यास लेखन प्रारंभ किया। गाँवों की समस्याएं उपन्यासों का विषय बनी। प्रस्तुत शोध पत्र में उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का अवलोकन किया गया है

प्रस्तावना

ग्रामीण लेखन में प्रेमचंद जी ने गावों का यथार्थ वर्णन कर अमरत्व प्राप्त कर लिया। उनके अनेक उपन्यास ग्रामीण जीवन का दर्पण हैं। ग्रामीण उपन्यासों में हमारे देश के गावों का सजीव रूप साकार हो उठा है । उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद की गणना विश्वस्तरीय साहित्यकारों में होती है। गोर्की, टालस्टाय, डिकेन्स आदि विश्व के महान उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रेमचंद का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके उपन्यासों में आदर्श स्थापना की गई है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में ''गोदान'' को काफी चर्चा मिली, जो कि एक शुद्ध ग्रामीण उपन्यास है। गोदान के चरित्र होरी , धनिया, गोबर आदि आज भी लोगों की जिह्वा पर विद्यमान हैं। नगरीय वर्णन के साथ-साथ प्रेमचंद ने युवाओं द्वारा ग्राम सेवा में रुचि दिखाई। इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति 'गोदान' केा 'ग्रामीण जीवन का महाकाव्य' भी कहा गया है। ग्राम्य जीवन का सजीव चित्रण प्रस्तुत करने की दृष्टि से यह उपन्यास विश्व साहित्य में अपने प्रकार की अकेली रचना है। 'गोदान में नगरीय जावन के रहन-सहन के पश्चात् भी यह कृति ग्रामीण जीवन को ही समर्पित है। इसमें होरी भारतीय गावों के साधारण कृषकों का प्रतिनिधि बन कर सामने आया है , जो अत्यंत मर्मान्तक स्थिति में जीवन यापन करता है।

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

प्रेमचंद का 'प्रेमाश्रम' उपन्यास तो 'भारत माता ग्रामवासिनी' इस काव्योक्ति को रुपायित करता है। भारत ग्रामों का देश है , ये सभी बुद्धिजीवी कहते हैं परन्तु इस बात को विश्लेषित कर , उन्हे लोंगों के समक्ष प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास प्रेमचंद जी के द्वारा ही हुआ है। जहां भी हल कुदाल की बात हो, वहां वे प्रगतिशील लेखक की भांति डटे रहते हैं। प्रेमचंद युगीन गाँव आज के गावों से इस अर्थ में भिन्न थे कि उस समय

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जमींदारों का अन्याय और शोषण अपनी पराकाष्ठा पर था। जमींदारी उन्मूलन की अर्धशताब्दी से अधिक समय व्यातीत होंने पर भी गावों की समस्याओं का आंशिक समाधान भी नहीं हुआ है। जमी़दारें का स्थान बड़े भूमिपतियों और प्रभावशाली लोगों जैसे पंचायतों के मुखियाओं और सरपंचों ने ले लिया है।

इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन की समस्याओं के मूल में जमी़दार है , किन्तु बेचारा किसान जिस किसी के संपर्क में आता है वही उसका शोषण करने लगता है, अपना सामान समझने लगता है। सेठ-साहूकार, सूदखोर, दुकानदार, व्यापारी, व्यवसायी, भूमिपति सभी के शोषण का लक्ष्य कोई बनता है तो वह अभागा कृषक ही है। इसमें जमी़दार की क्रूरता की कोई सीमा ही नहीं है , वह किसानों के साथ हर प्रकार का पाश्विक व्यवहार करता है। वह किसानों को चिलचिलाती धूप में खड़े रहने को बाध्य करता है , उनकी पिटाई भी करता है, उनकी औरतों को भी परेशान करता है। ग्रामीण समस्या के साथ ही उसके समाधान की विधि भी प्रेमचंद ने प्रस्तुत की है , और आदर्श ग्राम की स्थापना की है।

वृंदावन लाल वर्मा जी की 'टूटे कांटे' उपन्यास में ग्राम परिवेश की प्रधानता है। इस उपन्यास में ग्रमीण अंचल के यथार्थ का चित्रण प्रमुखता से हुआ है। जाट युवकों के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण जीवन की तत्कालीन स्थितियों का विवेचन प्रस्तुत किया है। जाटों की समबुद्धि और वीरता की भी गाथा इस उपन्यास में उपलब्ध है। जयशंकर प्रसाद जी बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यास 'तितली'' में ग्रामीण और कृषक जीवन का वर्णन किया है। यशपाल जी भी उपन्यासकार के रुप में विविधता से भरे हुए हैं। आपने 'मनुष्य के रुप ' उपन्यास में विधवा समस्या को उठाया है। विधवा हो जाने के पश्चात् अपने ही परिजनों के द्वारा प्रताड़ित होती है।

इसी संदर्भ में फणीश्वर नाथ रेणु जी का ग्रामीण उपन्यास 'मैला आंचल ' बिहार के ग्रामीणों की दुर्दशा का चित्रण करने वाला उपन्यास है। जिसमें गाँव की राजनीति दिखाई देती है। इनकी 'परती परिकथा' में भी स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की ग्रामीण गतिविधियों का चित्रण है। इस उपन्यास में गाँव के लोगों के अंधविश्वास और रुढ़ियों को तोड़ने का प्रयास किया गंया है। इसमें गाँव के कुत्सित पक्ष को उजागर कर औरतों के शरिरिक शोषण रेखांकित किया गया है। इस उपन्यास को पढ़ने के पश्चात् यह प्रश्न उभरता है कि क्या सचमुच गाँव का एक रूप यह भी है ? फणीश्वर नाथ रेणु की यह औपान्यासिक कृति पाठकों के ह्रदय में जुगुप्सा पैदा कर जाती है।

रेणु जी का 'जुलूस' उपन्यास भी स्वतंत्रता पश्चात् देश विभाजन की त्रासदी से भरा हुआ उपन्यास है। इनका 'दीर्घतपा' उपन्यास भी गावों की एक लड़की की कहानी है , जो समाज के एक पक्ष में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है। यह एक सार्थक कृति है , जिससे समाज कुछ शिक्षा ले सके।

डॉ..रांगेय राघव श्रेष्ठ उपन्यासकार तो थे ही , उन्होनें हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को भी समृद्ध किया है। इनकी 'आखिरी आवाज ' उपन्यास भी आंचलिक उपन्यास है। जिसके माध्यम से गावों में प्रचलित बुराईयों का पर्दाफाश हुआ है। कहा जाता है कि स्वार्थपरता तो नगरों में ही है, गाँव अत्यंत निर्मल हैं, परन्तु यह कृति भ्रम तोड़ देती है। गाँवों में संपन्नों द्वारा विपन्नों पर जो अमानवीय व्यवहार होता है , जातिवाद के कारण चरम पर है। गाँवों की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पंचायते भी भ्रष्ट हैं, जिसमें अन्याय ही होता है। यह कृति गाँव की दीर्घ गाथा है , जो प्रेमचंद की 'गोदान' के समकक्ष प्रतीत होती है। परन्तु प्रेमचंद के 'गोदान' में करुणा का उद्रेक है।

ग्रामीण उपन्यासों में डॉ..रामदरश मिश्र का 'अपने लोग' उपन्यास भी आता है जो आंचलिक उपन्यास है। यह उपन्यास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् गाँवों में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है। स्वतंत्रता पश्चात् नवीनता की आशा , निराशा में परिवर्तित हो गई है। गाँवों में रीति-रिवाजों को धत्ता बताया जा रहा है , भोले-भाले ग्रामीण का भोलापन निःशेष हो गया है। उनका अपनापन भी कहीं खो सा गया है।

मिश्र जी की 'दूसरा घर' औपन्यासिक कृति में भी गाँवों की मिट्टी की सौंधी गंध है, जो गाँव से दूर जाने वालों के हृदय में भी बसी रहती है। ग्रामीण जीवन की सीमाएं उसे वहां भी घेरे रहती है। ग्रामीण जीवन की समीपता का अहसास दिलाने वाला उपन्यास है 'दूसरा घर'। यह यथार्थपरक एवं सशक्त कृति है। मिश्र जी का अन्य ग्रामीण उपन्यास 'पानी कं प्राचीर' एवं 'जल टूटता हुआ' है। 'पानी के प्रचीर ' उपन्यास में ग्रामांचल की बुरी स्थिति है , जिसमें बाढ़ की विभीषिका पारंपरिक झगड़े तथा युवा पीढ़ी में व्याप्त दुराचार की प्रवृत्ति खुलकर दिखाई पड़ती है। ग्रामीण लोकगीतों और प्रकृति का चित्रण भी मनभावन है। 'जल टूटता हुआ ' उत्तरप्रदेश के पूर्वांचल के गाँव की कहानी है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति कोई बहुत बड़ा वरदान लेकर नहीं आई , जिसमें जमींदार तो अंग्रेजों के साथ थे जबकि किसान , मजदूर तथा दलितों ने कंधे से कंधा मिलाकर आजादी को पाया। लेकिन गांवों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वे आज भी वैसे ही हैं , जैसे पहले थे। इस उपन्यास में गांव की व्यथा-कथा को सारे आयामों में प्रस्तुत किया गया है। अंधविश्वास का भी बोलबाला है। ग्रामीण जीवन पर लिखा यह उपन्यास इस जीवन के महाकाव्य से कम नही है।

डॉ..शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' भी एक अंचल- विशेष की कथा है। यह भी स्वतंत्रता पश्चात् गांवो के अविकास की कहानी है। गांवों के विकास के नाम पर दी जाने वाली राशि से कोई विकास ही नहीं हुआ। ग्रामीण जीवन के नर्क को बताने का प्रयास भी इस उपन्यास में हुआ है। नारी उत्पीड़न , जमींदारों का अत्याचार, ये तो अब गांवों की सामान्य-सी कहानी हो गया है। शोषण , भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अन्याय, बेईमानी, गरीबी और अत्याचार की अलग-अलग वैतरणी' सभी गांवों में प्रवाहित है। कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो इन गांवों की दुर्दशा के विरुद्ध आवाज उठाए या तो इनसे समझौता करो या उनमें डूब मरो या तो पलायनवादी बनों। अब ग्रामीण क्षेत्रों का यही हाल दिखाई पड़ता है। आज भी गांवों की स्थिति में बहुत सुधार नहीं हुआ है।

शिवप्रसाद सिंह का 'औरत' उपन्यास भी गांव पर आधरित है, जिसे नारी के शोषण के साथ उसके बुद्धि-विवेक और साहस की कथा है। नारी इतनी भी विवश नहीं है , वह साहस के साथ अपनी बेड़ियों को तोड़ कर फेंक भी सकती है। 'औरत' उपन्यास में ग्रामीण समस्याओं और नारी व्यथा-कथा के अतिरिक्त आदि से अंत तक गांव की गंध रची बसी है।

पद्मभूषण प्राप्त कमलेश्वर की 'सुबह दोपहर शाम' उपन्यास ग्रामीण लोगों के स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की कहानी है। स्वतंत्रता आन्दोलन में गांव

के गरीब, देहात के लोगों ने पूर्ण योगदान दिया है। इस उपन्यास में गांव की जिंदगी को बड़ी अच्छी तरह रुपायित किया गाया है। कमलेश्वर के इस ग्रामीण उपन्यास का महत्व इसलिए है क्योंकि ये उन स्वतंत्रता सेनानियों की गाथा कहती है जिनकी ओर देखने का प्रयास ही किसी ने नहीं किया। उपन्यास के क्षेत्र में लेखक हिमांशु जोशी का योगदान प्रशंसनीय है। इनका 'कगार की आग' उपन्यास आंचलिक उपन्यास है , जिसमें पहाड़ी जीवन का सशक्त चित्रण उपलब्ध है। यह उपन्यास पहाड़ी लोगों के सुख-दुख , भाव-अभाव तथा प्रकृति के साथ निरंतर संघर्ष की कहानी है। पहाड़ी आंचलिक उपन्यास में इस कृति की केाई समानता नहीं है। हिमांशु जोशी की 'तुम्हारे लिए' उपन्यास ग्रामीण छात्र की शिक्षा से संबंधित है। यह आर्थिक अभावों से गुजरती , प्रेम के साथ , जीवन-दर्शन को छूती हुई कहानी है।

उपन्यास लेखिका मैत्रेया पुष्पा जी को ग्रामीण जीवन का अच्छा अनुभव है। उनके 'इदन्नमम' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की समस्याओं को उठाया गया है। इनके गांव में स्वतंत्रता के पश्चात् दुर्दशा ही है। गांव की प्रकृति इसमें रची बसी है। पुरुष के हाथों नारी के उत्पीड़न की व्यथा-कथा इस उपन्यास के माध्यम से कही गई है। इस उपन्यास की भाषा इस उपन्यास का प्राण है। गांवो में मर्यादा तोड़ने वाली औरत को जीने का अधिकार नहीं है।

रामेश्वर शुक्ल अंचल जी ने भी अपनी उपन्यास 'चढ़ती धूप ' का परिवेश ग्रामीण ही रखा है। जिसकी प्रकृति राजनीतिक है किन्तु प्रचीन परंपराओं और संस्कारों से भी वह युक्त है। गांवों में प्रेम विवाह नहीं किए जाते क्योंकि वहां प्रेम विवाह करना गलत कार्य माना जाता है।

विवेकी राय जी भी गांवों के कुशल चितेरे माने जाते हैं। वे सदा गांवों से जुड़े रहे। इनकी उपन्यास कृतियाँ 'सोनामाटी' एवं 'मंगलभवन' विशेष रुप से चर्चित हुई। 'सोनामाटी' में गांवों में व्याप्त हो रही मूल्यहीनता की कहानी अत्यंत मार्मिक ढंग से कही गई है। पैसे की संस्कृति गांवों में भी व्याप्त हो गई है। 'मंगलभवन' उदात्त मूल्यों को सामर्पित है। ये मूल्य, गांव और शहर दोनों में अपेक्षित है।

उपन्यास का डॉ.राही मासूम रजा यथार्थवादी लेखकों की श्रेणी में आते हैं। उनका 'आधा गांव' उपन्यास ही आंचलिक स्वरुप में दिखाई पड़ता है, जिसमें विभाजन पश्चात् मुस्लिमों की पीड़ा बताई गई है। ये बताया गया हैकि मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग जिस धरती को अपना समझते थे वही अब उनके लिए पराई हो गई। इस पीड़ा को राही ने अपनी इस कृति में अच्छी तरह उकेरा है।

सामान्यतः सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एक श्रेष्ठ कवि के रुप में विख्यात हैं। लेकिन उपन्यासों में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी 'बिल्लेसुर बकरिहा'' रचना में ग्रामीण जीवन की संकीर्णता , छल-प्रपंच आदि की यथार्थ कथा कही गई है। गरीबी तो ग्रामीण जीवन के साथ सदा लगी ही रही है। उपन्यासकार ने इन गरीब बंधुओं के जय-पराजय, सुख-दुख एवं विविशता की कहानी को अपने रुप में बिना किसी काल्पनिकता का आखेट किए हुए एक तटस्थ रचनाकार के रुप में अंकित की है। इनकी 'निरुपमा' रचना में भी ग्रामीण परिवेश के आर्थिक अभाव एवं वैचारिक संकीर्णता तथा सड़े-गले परंपरगत संस्कारों पर निराला ने कठोर प्रहार किया है। ग्रामीण जीवन का ऐसा सजीव वर्णन यह सोचने को बाध्य करता है कि उपन्यासकार ने इस जीवन को अत्यंत समीप से देखा और भोगा है। निराला जी

की 'अलका' उपन्यास भी गांव के लोगों के शोषण और व्यथा की कहानी है। गांव के लोगों के प्रति किसी की सहानुभूति नहीं है।

रचनाकार नागार्जुन के उपन्यासों की कथावस्तु भी पूर्णतः मिथिलांचल से ही ली गई है। इनकी 'बलचनमा' कृति भी कृषक मजदूरों पर होने वाले जमींदारी अत्याचार और शोषण का अधिकारिक वर्णन प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण जीवन सदा से ही हमारे साहित्य से जुड़ा रही है। ग्रामीण भाषा , आचार-विचार, संस्कार, रूढ़ियाँ सभी हमारे जीवन में समाया हुआ है , क्योंकि कहीं न कहीं प्रत्येक व्यक्ति का जन्मस्थल भी गांव ही रहा है। हिन्दी साहित्य भी ग्रामीण परिवेश से अछूता नहीं रहा। अनेक लेखक भारतीय परिवेश के गांवों से ही निकले है, उनकी भाषा, लेखनी लेखनी सभी गांव की मिट्टी की सुगंध घोले हुए है।

निष्कर्ष

साहित्य में उपन्यासों का अहम स्थान रहा है। आंचलिकता एवं स्थान का प्रभाव उप न्यासों में पूर्णतः छाया हुआ है। भारतीय गांवों में समस्याओं की कमी नहीं है। उपन्यासों में ग्रामीणें की राजनीतिक जागरुकता , गुलामी का बंधन, ग्राम-सुधार, रुढिवादिता, जातिवादिता, सांस्कृतिक गतिविधियों ये सभी प्रमुख विषय रहे हैं। जिनका हमारे हिन्दी के साहित्यकारों ने बखूबी उपयोग किया है। गांवों और हमारे साहित्य का रिश्ता अत्यंत प्रगाढ़ है। जिसमें अंचल के लोगों के प्रेम की मिठास फैली हुई है। दूर-दराज के स्थानों में बसे यातायात के साधनों से विहीन जिन गांवों तक रोशनी भी नहीं पहुँच पाई, वहां पर साहित्यकारों ने पहुंचकर हमें गांवों और वहां की विषमताओं का दृश्य दिखाया। जब तब सभी वर्गों के लोग एवं सरकार मिलकर एकजुट होकर गांवों के विकास का प्रयास नहीं करेंगे, तब तक गांवों का शोषण जारी रहेगा। गांव के लोग पलायन कर शहर की ओर आयेंगे, तब गांव में कौन रहेगा ? अनाज कौन पैदा करेगा ? यही प्रश्न ये रचनाएं एवं साहित्यकार हमारे मस्तिष्क में छोड़ जाते हैं। गांवों में जागरुकता द्वारा ही हमारे देश का विकास संभव हो सकेगा। आंचलिक उपन्यासों को लिखने का भी यही उद्देश्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार , डॉ. .भगवतीशरण मिश्र, राजपाल प्रकाशन*
2. *गोदान, प्रेमचंद*
3. *प्रेमाश्रम, प्रेमचंद*
4. *टूटे कांटे, वृंदावन लाल वर्मा*
5. *मैला आंचल, फणीश्वरनाथ रेणु*
6 *आखिरी आवाज , रागेय राघव*
7. *अपने लोग, रामदरश मिश्र*
8. *दूसरा घर, रामदरश मिश्र*
9. *सुबह दोपहर शाम, कमलेश्वर*
10. *तुम्हारे लिए, हिमांशु जोशी*
11. *इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा*
12. *सोनामाटी एवं मंगलभवन, विवेकी राय*
13. *निरुपमा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला*
14. *बलचनामा, नागार्जुन*